Abhishek Vishwakarma
Junior Runner Up 2
Cambridge Hr. Sec. School, Trilok Nagar
Dewas

विषय: ''हममें से प्रत्येक व्यक्ति ग्लोबल वॉर्मिंग और मौसम के बदलाव को टालने और प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा के लिये क्या कर सकता है?''

ग्लोबल वार्मिंग

महासागर, बर्फ की चोटी सहित पूरा पर्यावरण और धरती की सतह का नियमित गर्म होने की प्रक्रिया को ''ग्लोबल वार्मिंग'' कहते हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के निम्न कारण है।

इसका मुख्य कारण ग्रीनहाउस गैस है। जो कुछ प्राकृतिक प्रक्रियाओं से तो कुछ इंसानों की पैदा की हुई है। वातावरण में कई सारे ग्रीनहाउस गैसों के निकलने का कारण औद्योगिक क्रियाएँ हैं क्योंकि लगभग हर जरूरत को पूरा करने के लिए आधुनिक दुनिया में औद्योगिकीकरण की जरूरत है।

अंटार्कटिका में ओजोन परत में कमी आना भी ग्लोबल वार्मिंग का एक मुख्य कारण है।

ग्लोबल वार्मिंग का समाधान

ग्लोबल वार्मिंग के द्वारा कुछ ऐसे नुकसान है। जिनकी भरपाई असंभव है। (बर्फ की चोटियों का पिघलना) हमें अब पीछे नहीं हटना चाहिए और ''ग्लोबल वार्मिंग'' के मानव जनिजत कारकों को कम करने के द्वारा हर एक को इसके प्रभाव को घटाने के लिए अपना बेहतर प्रयास करना चाहिए।

मौसम के बदलाव को टालना

गर्म मौसम होने से वर्षा का चक्र प्रभावित होता है इससे बाढ़ या सूखे का खतरा भी हो सकता है। ध्रुवीय ग्लेशियरी के पिघलने से समुद्र के स्तर में वृद्धि की भी आशंका हो सकती है। पिछले वर्ष के तूफानों व बवंडरों ने अप्रत्यक्ष रूप से संकेत दे दिए हैं। हमें अपने आस-पास पेड़-पौधे लगाना चाहिए जिससे हमारे देश में समय-समय पर बारिश होती है।

प्राक्रतिक पर्यावरण

पर्यावरण संरक्षण से अभिप्राय सामान्यतः पेड़-पौधे के संरक्षण एवं हरियाली के विस्तार से लिया जाता है। परंतु विस्तृत व विराट रूप से इसका तात्पर्य पेड़-पौधों के साथ-साथ जल, पशु पक्षी एवं संपूर्ण पृथ्वी की रक्षा से है हमें अपने आस-पास कचरा न जमा होने दें और हमें हमेशा कागज़ के थैले का उपयोग करें। भारत के प्रत्येक नागरिक को पेड़-पौधे लगाना चाहिए।

Hindi